क्रांति धरा

मार्च 2026 छमाही

मेरठ अंचल की गृह पत्रिका

हमारा विजन

"एक ऐसी विश्वस्तरीय वित्तीय संस्था के रूप में आना जो अत्यंत विश्वस्त और प्रशंसनीय हो तथा जिसे प्रत्येक ग्राहक व निवेशक बहुत पसंद करते हों एवं जिस पर उसके कर्मचारियों को गर्व हो।"

Our Vision

"To emerge as the most trusted, admired and sought-after world class financial institution and to be the most preferred destination for every customer and investor and place of pride for its employees."

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

हमारा मिशन

"कर्मचारियों की कार्यकुशलता बढ़ाकर उनकी प्रभावी सहभागिता से एवं नवीनतम प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा कारबार तथा लाभप्रदता में सतत वृद्धि करते हुए एवं सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान कर सामाजिक-आर्थिक दायित्वों को पूरा करने हेतु सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक कहलाना।"

Our Mission

"To be a top class Bank to achieve sustained growth of business and profitability, fulfilling socio-economic obligations, excellence in customer service; through upgradation of skills of staff and their effective participation and making use of state-of-the-art technology."

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

क्रांति धरा

अक्तूबर, 2025 से मार्च, 2026 तक

संरक्षक
श्री जावेद
उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

प्रेरणा
श्री महेंद्र सिंह
सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख

श्रीमती दीप्ता पोरस
मुख्य प्रबंधक

श्री आशीष सिंह गौड़
मुख्य प्रबंधक

श्री विवेक कुमार
मुख्य प्रबंधक

संपादक
श्रीमती प्रतिभा रतन
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

पत्र व्यवहार / सुझाव का पता
यूको बैंक
अंचल कार्यालय मेरठ
सी-2/6, डी ब्लॉक, मवाना रोड, गंगा नगर,
मेरठ (उ.प्र.)
पिन 250001

एक टीम – एक स्वप्न – एक लक्ष्य

इस अंक में दिए गए विचार संबंधित लिखकों के है, संपादक मंडल तथा यूको बैंक के नहीं| इन विचारों से संपादक मंडल अथवा यूको बैंक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है|

विषय	पृष्ठ
अंचल प्रमुख का संदेश	2
उप अंचल प्रमुख का संदेश	3
संपादकीय	4
आलेख	
ग्राहक सेवा में उत्कृष्टता : बैंकिंग की पहली प्राथमिकता – शिव कुमार	5
डिजिटल क्षितिज की ओर अग्रसर : यूको बैंक में विकास और ग्राहक संतुष्टि की नई गति – अपूर्व नास्कर	8
एटीएम स्थल एवं आधारभूत संरचना का रखरखाव – सागर पीपावत	10
कार्य और व्यक्तिगत जीवन का संतुलन : सफलता की वास्तविक पहचान – अभिषेक त्यागी	11
युवाओं का अकेलापन : विकास के दौर की एक मौन त्रासदी - सोनिया शिरॉन	13
डिजिटल युग और संवाद की संस्कृति–सीमा मौर्या	17
कहानी	
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत – प्रतिभा रतन	19
लेट गो : खुशहाल जीवन का रहस्य – मेघना शर्मा	22
गतिविधियां	
विभिन्न नराकासो के तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन	24
यूको राजभाषा सम्मान	26
अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	27
सतर्कता जागरूकता सप्ताह	28
यूको बैंक के 84 गौरवशाली वर्ष	30
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026	31
शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक	32
एमएसएमई, कृषि एवं रिसोर्स कार्निवॉल	33
कवर पृष्ठ का संक्षिप्त विवरण	34
पुस्तक समीक्षा – प्रतिभा रतन	36
महादेवी वर्मा – हिंदी साहित्य की आधुनिक मीरा	37
कविता	
बेशक देर से आ जाना – दीप्ता पोरस	38
एनपीएस वात्सल्य	39
हर चीज का हल होता है, आज नहीं तो कल होता है	40
व्यवसाय मार्च, 2026	41

उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय साथियों,

हर संस्था की पहचान केवल उसके व्यवसाय से नहीं, बल्कि उसके कार्य करने की संस्कृति, ग्राहकों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता और कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों से बनती है। पिछले छह महीनों की हमारी यात्रा भी इसी विश्वास को और अधिक सुदृढ़ करती है। अनेक चुनौतियों और अवसरों के बीच हमने अपने लक्ष्यों की ओर निरंतर कदम बढ़ाए, ग्राहकों का विश्वास अर्जित किया और टीम भावना के साथ नई उपलब्धियाँ हासिल कीं। हमारी गृह पत्रिका का यह अंक इन्हीं प्रयासों, उपलब्धियों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों का साक्षी है।

आज बैंकिंग का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। डिजिटल तकनीक, नई सेवाएँ और ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाएँ हमें निरंतर बेहतर बनने के लिए प्रेरित करती हैं। ऐसे समय में हमारा उद्देश्य केवल व्यवसाय में वृद्धि करना नहीं, बल्कि प्रत्येक ग्राहक को सरल, सुरक्षित, पारदर्शी और गुणवत्तापूर्ण बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराना भी है। मुझे प्रसन्नता है कि हमारे अंचल ने व्यवसाय वृद्धि के साथ-साथ ग्राहक सेवा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है। यह सफलता आप सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के समर्पण, अनुशासन और परिश्रम का परिणाम है।

राजभाषा हिंदी हमारे बैंक की कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग है। कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का बढ़ता प्रयोग न केवल राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन का प्रमाण है, बल्कि ग्राहकों के साथ सहज संवाद स्थापित करने का भी सशक्त माध्यम है। सरल, स्पष्ट और व्यवहारिक हिंदी के माध्यम से हम अपने ग्राहकों तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुँच सकते हैं।

हमारी गृह पत्रिका केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह हमारे अंचल की कार्य संस्कृति, उपलब्धियों और सहयोगियों की साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा का सुंदर प्रतिबिंब भी है। इस अंक में प्रकाशित लेख, अनुभव, कविताएँ और अन्य रचनाएँ निश्चित रूप से पाठकों को नई जानकारी और प्रेरणा प्रदान करेंगी। मैं इस पत्रिका के संपादकीय मंडल तथा सभी रचनाकारों को उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। आइए, हम सभी उत्कृष्ट ग्राहक सेवा, व्यवसायिक प्रगति, राजभाषा के प्रभावी प्रयोग और आपसी सहयोग की भावना के साथ बैंक को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

जावेद

सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय साथियों,

हर कार्यकाल अपने साथ कुछ नए अनुभव, नई उपलब्धियाँ और आगे बढ़ने की नई प्रेरणा लेकर आता है। बीते छह महीनों में हमारे अंचल ने व्यवसाय, ग्राहक सेवा और डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। इन उपलब्धियों में प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का समर्पण और टीम भावना सराहनीय रही है।

हमारी गृह पत्रिका का यह अंक इन्हीं प्रयासों और उपलब्धियों का प्रतिबिंब है।

बैंक की सफलता का आधार ग्राहकों का विश्वास है। इसलिए हमारा प्रयास केवल व्यवसाय बढ़ाना ही नहीं, बल्कि प्रत्येक ग्राहक को बेहतर, सरल और गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ प्रदान करना भी है। मुझे विश्वास है कि हम सभी इसी प्रतिबद्धता के साथ आगे भी बैंक की प्रगति में अपना श्रेष्ठ योगदान देते रहेंगे।

राजभाषा हिंदी कार्यालयीन कार्यों को अधिक सहज, प्रभावी और ग्राहकों के अनुकूल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राजभाषा का बढ़ता प्रयोग हमारी कार्य संस्कृति को और सशक्त बनाता है। आशा है कि हम सभी इस दिशा में भी निरंतर सक्रिय रहेंगे।

मैं पत्रिका के संपादकीय मंडल एवं सभी रचनाकारों को इस सुंदर अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आप सभी के उज्ज्वल भविष्य और निरंतर सफलता की कामना करता हूँ।

महेंद्र सिंह

संपादकीय

नमस्कार !

अंचल कार्यालय मेरठ की गृह पत्रिका के नए अंक में आपका हार्दिक स्वागत है ।

पिछले अंक को आप सभी का भरपूर स्नेह और सहयोग मिला। आपकी रचनाओं, लेखों, कविताओं और सुझावों ने पत्रिका को समृद्ध बनाया। हमें विश्वास है कि यह अंक भी आपको पसंद आएगा।

हमारे बैंक में कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने, हिंदी में कार्य करने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने तथा कर्मचारियों को राजभाषा के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से यूको राजभाषा संकल्प कार्य-योजना को अंगीकार किया गया है। अंचल कार्यालय मेरठ तथा इसकी शाखाएं इस दिशा में निरंतर प्रयास कर रही हैं। कार्यालयीन कार्यों, बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

पिछले कुछ महीनों में अंचल कार्यालय एवं शाखाओं में अनेक राजभाषा गतिविधियों का आयोजन किया गया। हिंदी कार्यशालाएं, हिंदी पखवाड़ा, प्रतियोगिताएं तथा अन्य कार्यक्रमों में कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इन आयोजनों ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया।

यह पत्रिका आप सभी की अपनी पत्रिका है। इसे और अधिक उपयोगी और रोचक बनाने के लिए आपके सुझाव, लेख, कविताएं, संस्मरण और अनुभव सदैव आमंत्रित हैं।

आइए, हम सभी मिलकर राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग का संकल्प लें।

प्रतिभा रतन

शिव कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय मेरठ

आलेख

ग्राहक सेवा में उत्कृष्टता : बैंकिंग की पहली प्राथमिकता

किसी भी बैंक की वास्तविक पहचान केवल उसकी शाखाओं की संख्या, व्यवसाय के आकार या आधुनिक तकनीक से नहीं होती, बल्कि इस बात से होती है कि वह अपने ग्राहकों को कितनी अच्छी, सरल और भरोसेमंद सेवा प्रदान करता है। ग्राहक बैंक का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। यदि ग्राहक संतुष्ट है, तो बैंक की प्रतिष्ठा, विकास और सफलता स्वतः सुनिश्चित हो जाती है। इसलिए यह कहना बिल्कुल उचित है कि "ग्राहक सेवा में उत्कृष्टता ही बैंकिंग की पहली प्राथमिकता है।"

आज बैंकिंग का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग और यूपीआई जैसी सुविधाओं ने बैंकिंग को अधिक सुविधाजनक बनाया है। लेकिन इन सभी तकनीकी प्रगतियों के बीच ग्राहक का विश्वास, संतुष्टि और सकारात्मक अनुभव ही किसी बैंक की सबसे बड़ी पूंजी है।

ग्राहक सेवा का महत्व

बैंक और ग्राहक का संबंध केवल लेन-देन तक सीमित नहीं होता। ग्राहक अपने जीवन की बचत, भविष्य की योजनाएँ, व्यवसाय, शिक्षा, घर और अन्य महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के लिए बैंक पर भरोसा करता है। इसलिए बैंक की जिम्मेदारी केवल वित्तीय सेवाएँ देना नहीं, बल्कि ग्राहकों के साथ विश्वास का संबंध स्थापित करना भी है।

जब ग्राहक बैंक में सम्मान, सहयोग और समय पर समाधान प्राप्त करता है, तो उसका विश्वास और अधिक मजबूत होता है। यही विश्वास लंबे समय तक बैंक और ग्राहक के संबंधों को सुदृढ़ बनाए रखता है।

उत्कृष्ट ग्राहक सेवा का अर्थ

उत्कृष्ट ग्राहक सेवा का अर्थ केवल मुस्कुराकर स्वागत करना नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है—ग्राहक की आवश्यकता को समझना, सही

मार्गदर्शन देना, समय पर सेवा उपलब्ध कराना और उसकी समस्या का शीघ्र समाधान करना। एक उत्कृष्ट बैंकिंग सेवा में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए—

- ग्राहकों के साथ विनम्र और सम्मानजनक व्यवहार।
- सेवाओं में पारदर्शिता और स्पष्ट जानकारी।
- शिकायतों का त्वरित एवं निष्पक्ष समाधान
- समय की बचत और सरल प्रक्रियाएँ।
- सभी ग्राहकों के साथ समान व्यवहार।
- सुरक्षित और भरोसेमंद बैंकिंग व्यवस्था।

जब ये सभी बातें एक साथ मिलती हैं, तभी ग्राहक वास्तव में संतुष्ट होता है।

डिजिटल युग में ग्राहक सेवा

आज अधिकांश ग्राहक डिजिटल बैंकिंग का उपयोग कर रहे हैं। मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, यूपीआई, क्यूआर कोड, एटीएम और कैश रिसाइक्लर जैसी सुविधाओं ने बैंकिंग को चौबीसों घंटे उपलब्ध बना दिया है।

लेकिन केवल डिजिटल सुविधा उपलब्ध कराना ही पर्याप्त नहीं है। यह भी आवश्यक है कि ग्राहक इन सेवाओं का आसानी से उपयोग कर सके। बैंक को सरल मोबाइल ऐप, उपयोगकर्ता-अनुकूल वेबसाइट, स्पष्ट निर्देश तथा आवश्यकता पड़ने पर त्वरित सहायता उपलब्ध करानी चाहिए।

डिजिटल सेवा का उद्देश्य ग्राहक के लिए सुविधा बढ़ाना है, न कि उसे कठिन प्रक्रियाओं में उलझाना।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)और ग्राहक सेवा

आज बैंक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)का उपयोग तेजी से कर रहे हैं। चैटबॉट, वर्चुअल असिस्टेंट, स्मार्ट कॉल सेंटर और डेटा विश्लेषण जैसी तकनीकें ग्राहकों को तेज़ और बेहतर सेवा प्रदान कर रही हैं।

अब ग्राहक चौबीसों घंटे अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर सकता है, खाते की जानकारी ले सकता है और कई सेवाओं का लाभ बिना शाखा जाए ही उठा सकता है। फिर भी यह याद रखना आवश्यक है कि तकनीक मानव व्यवहार का स्थान नहीं ले सकती। जब कोई ग्राहक किसी समस्या, आर्थिक कठिनाई या विशेष परिस्थिति में बैंक आता है, तब उसकी बात धैर्यपूर्वक सुनना और संवेदनशीलता के साथ समाधान देना ही उत्कृष्ट ग्राहक सेवा की पहचान है।

ग्राहक शिकायतों का प्रभावी समाधान

कोई भी संस्था पूरी तरह त्रुटिहीन नहीं हो सकती। इसलिए महत्वपूर्ण यह है कि यदि किसी ग्राहक को कोई समस्या हो, तो उसका समाधान कितनी शीघ्रता और पारदर्शिता से किया जाता है। बैंक को ऐसी शिकायत निवारण प्रणाली विकसित करनी चाहिए जिसमें—

- शिकायत दर्ज करना आसान हो।
- ग्राहक को समय-समय पर प्रगति की जानकारी मिलती रहे।
- निर्धारित समय सीमा में समाधान किया जाए।
- यदि समाधान शाखा स्तर पर संभव न हो, तो उसे तुरंत उच्च स्तर पर भेजा जाए।

त्वरित समाधान ग्राहक का विश्वास कई गुना बढ़ा देता है।

वित्तीय साक्षरता और ग्राहक मार्गदर्शन

एक अच्छा बैंक केवल सेवाएँ ही नहीं देता, बल्कि ग्राहकों को सही जानकारी भी देता है। बैंक समय-समय पर वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं, जिनमें ग्राहकों को बचत, निवेश, ऋण, बीमा, डिजिटल बैंकिंग तथा साइबर सुरक्षा के बारे में सरल भाषा में जानकारी दी जाए।

विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों, वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं, विद्यार्थियों और पहली बार बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करने वाले ग्राहकों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन देना अत्यंत आवश्यक है।

सुरक्षित बैंकिंग भी उत्कृष्ट सेवा का हिस्सा

आज ग्राहक सेवा का अर्थ केवल सुविधा प्रदान करना नहीं, बल्कि ग्राहक की सुरक्षा सुनिश्चित करना भी है।

बैंक को अपने ग्राहकों को समय–समय पर यह जानकारी देनी चाहिए कि—

- ओटीपी, यूपीआई पिन और पासवर्ड किसी से साझा न करें।
- फर्जी कॉल और संदिग्ध लिंक से सावधान रहें।
- केवल बैंक की आधिकारिक वेबसाइट और मोबाइल ऐप का उपयोग करें।
- किसी भी संदेह की स्थिति में तुरंत बैंक से संपर्क करें।

जब ग्राहक सुरक्षित रहेगा, तभी वह बैंक की सेवाओं पर पूरा विश्वास कर सकेगा।

राजभाषा हिंदी और ग्राहक सेवा

भारत जैसे बहुभाषी देश में प्रभावी संवाद ग्राहक सेवा का महत्वपूर्ण आधार है । बड़ी संख्या में ग्राहक हिंदी में संवाद करना अधिक सहज महसूस करते हैं । इसलिए बैंकिंग सेवाओं , प्रपत्रों, सूचना-पट्टों, मोबाइल ऐप और जागरूकता संदेशों में सरल हिंदी का प्रयोग ग्राहक सेवा को और अधिक प्रभावी बनाता है।

जब ग्राहक अपनी भाषा में जानकारी प्राप्त करता है, तो वह सेवाओं को बेहतर ढंग से समझता है और उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

कर्मचारियों की भूमिका

उत्कृष्ट ग्राहक सेवा का सबसे महत्वपूर्ण आधार बैंक के कर्मचारी होते हैं। उनकी कार्यकुशलता , व्यवहार, धैर्य और सकारात्मक सोच ही ग्राहक के अनुभव को निर्धारित करती है।

प्रत्येक कर्मचारी को यह समझना चाहिए कि वह केवल बैंक का प्रतिनिधि नहीं, बल्कि ग्राहक के विश्वास का संरक्षक भी है।

विनम्र व्यवहार, सही जानकारी, समय की पाबंदी, पारदर्शिता और समस्या के समाधान की भावना ग्राहक के मन में बैंक की सकारात्मक छवि बनाती है।

विकसित भारत 2047 और ग्राहक-केंद्रित बैंकिंग

भारत वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है । इस लक्ष्य को प्राप्त करने में बैंकिंग क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है । यदि प्रत्येक नागरिक तक सरल , सुरक्षित, पारदर्शी और गुणवत्तापूर्ण बैंकिंग सेवाएँ पहुँचेंगी , तो आर्थिक विकास को नई गति मिलेगी।

ग्राहक-केंद्रित बैंकिंग, डिजिटल नवाचार , वित्तीय समावेशन, सुरक्षित लेन-देन और उत्कृष्ट ग्राहक सेवा विकसित भारत की मजबूत वित्तीय व्यवस्था की आधारशिला बनेंगे।

ग्राहक किसी भी बैंक की सबसे मूल्यवान संपत्ति होता है । आधुनिक तकनीक, डिजिटल सेवाएँ और नई योजनाएँ तभी सफल हैं , जब ग्राहक उनसे संतुष्ट हो । इसलिए उत्कृष्ट ग्राहक सेवा केवल बैंक की एक गतिविधि नहीं, बल्कि उसकी कार्यसंस्कृति का मूल आधार होनी चाहिए।

जब बैंक अपने प्रत्येक ग्राहक का सम्मान करेगा , उसकी आवश्यकताओं को समझेगा , समय पर समाधान देगा, सुरक्षित और सरल सेवाएँ उपलब्ध कराएगा तथा विश्वास का वातावरण बनाए रखेगा, तभी वह वास्तव में उत्कृष्ट बैंकिंग सेवा प्रदान कर सकेगा।

अंततः "उत्कृष्ट ग्राहक सेवा ही सफल बैंकिंग की पहचान है ।" यही विश्वास को मजबूत करती है, ग्राहकों को बैंक से जोड़ती है और बैंक को निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाती है।

अपूर्व नस्कर
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय मेरठ

आलेख

डिजिटल क्षितिज की ओर अग्रसर : यूको बैंक में विकास और ग्राहक संतुष्टि को नई गति

आज बैंकिंग का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। पहले जहाँ अधिकांश बैंकिंग कार्य केवल शाखाओं में होते थे , वहीं अब डिजिटल बैंकिंग ने उन्हें घर और कार्यालय तक पहुँचा दिया है । आज डिजिटल बैंकिंग केवल एक सुविधा नहीं , बल्कि व्यवसाय बढ़ाने, कार्यों को सरल बनाने और ग्राहकों को बेहतर सेवा देने का सबसे प्रभावी माध्यम बन चुकी है।

यदि हम ग्राहकों को उनके घर या कार्यालय से ही बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराएँ, तो एक ओर ग्राहकों का अनुभव बेहतर होगा और दूसरी ओर बैंक का व्यवसाय भी तेजी से बढ़ेगा।

1. घर बैठे बैंकिंग – ग्राहकों के लिए बड़ी सुविधा

यूको बैंक अपने यूको एमबैंकिंग प्लस , कॉर्पोरेट मोबाइल बैंकिंग , इंटरनेट बैंकिंग तथा अन्य डिजिटल सेवाओं के माध्यम से बैंक को ग्राहकों के नज़दीक पहुँचा रहा है।

खुदरा (Retail) ग्राहकों के लिए सुविधाएँ

- डिजिटल खाता खोलना

टैब बैंकिंग के माध्यम से बैंक कर्मचारी ग्राहकों का खाता तुरंत खोल सकते हैं। इससे कागजी कार्यवाही कम होती है और ग्राहक को जल्दी सेवा मिलती है।

- डिजिटल ऋण सुविधा

ग्राहक घर बैठे होम लोन , कार लोन और पर्सनल लोन के लिए अपनी पात्रता देख सकते हैं , आवेदन कर सकते हैं और शीघ्र स्वीकृति प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए शाखा जाने की आवश्यकता नहीं होती।

- एफडी पर ऋण (Loan Against FDR)

यदि ग्राहक को तुरंत धन की आवश्यकता हो , तो वह अपनी ऑनलाइन एफडी के विरुद्ध भी डिजिटल माध्यम से ऋण प्राप्त कर सकता है।

- दैनिक बैंकिंग सेवाएँ

ग्राहक 24×7 निम्नलिखित सेवाओं का लाभ ले सकते हैं— IMPS, NEFT और RTGS द्वारा धन हस्तांतरण ; बिजली , पानी, मोबाइल आदि के बिलों का भुगतान ; बीमा का नवीनीकरण

- विभिन्न सरकारी योजनाओं में निवेश

निवेश (Wealth Management)

मोबाइल बैंकिंग ऐप के माध्यम से ग्राहक— म्यूचुअल फंड में निवेश , डीमैट खाता खोलना , एनपीएस, पीपीफ तथा सुकन्या समृद्धि योजना जैसी सरकारी योजनाओं में निवेश आसानी से कर सकते हैं। इस प्रकार एक ही ऐप में बैंकिंग और निवेश दोनों की सुविधा उपलब्ध है।

2. डिजिटल बैंकिंग से व्यवसाय में वृद्धि

डिजिटल बैंकिंग केवल सुविधा नहीं , बल्कि व्यवसाय बढ़ाने का भी एक सशक्त माध्यम है । हर

डिजिटल लेन-देन बैंक के लिए नए व्यवसाय का अवसर बन सकता है।

- ग्राहकों के अनुसार उपयुक्त उत्पाद

ग्राहकों के डिजिटल लेन-देन का विश्लेषण करके उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुसार कार लोन , पर्सनल लोन, टॉप-अप होम लोन या म्यूचुअल फंड SIP जैसे प्रस्ताव दिए जा सकते हैं।

- जमा (Deposits) में वृद्धि

ग्राहक मोबाइल या इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से तुरंत एफडी और आरडी खोल सकते हैं। इससे कागजी कार्यवाही कम होती है , लागत घटती है और बैंक की आय बढ़ती है।

- शुल्क आधारित आय (Fee income)
  यदि बैंक अपनी डिजिटल सेवाओं में बीमा , टैक्स भुगतान और डीमैट जैसी सुविधाएँ जोड़ता है, तो इससे बैंक की शुल्क आधारित आय भी बढ़ती है।

3. डिजिटल बैंकिंग को और मजबूत बनाने की रणनीतियाँ

डिजिटल बैंकिंग में और आगे बढ़ने के लिए हम निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान दे सकते हैं -

❖ मुख्य रणनीतियाँ

- व्यक्तिगत (Personalized) सेवाएँ

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग की सहायता से ग्राहकों की जरूरत को समझकर उन्हें उनकी पसंद के अनुसार सेवाएँ और उत्पाद उपलब्ध कराए जाएँ।

- API बैंकिंग का विस्तार

फिनटेक कंपनियों , ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और कॉर्पोरेट संस्थानों के साथ मिलकर बैंक की भुगतान एवं ऋण सेवाओं को उनके प्लेटफॉर्म से जोड़ा जाए।

- साइबर सुरक्षा को और मजबूत बनाना

ग्राहकों को सुरक्षित डिजिटल बैंकिंग के बारे में जागरूक किया जाए। साथ ही मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन और रियल-टाइम फ्रॉड मॉनिटरिंग जैसी आधुनिक सुरक्षा व्यवस्था अपनाई जाए।

- 'फिजिटल' (Phygital) मॉडल अपनाना

शाखाएँ ग्राहकों के विश्वास का केंद्र हैं। शाखा में आने वाले ग्राहकों को मोबाइल बैंकिंग और अन्य डिजिटल सेवाओं का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जाए। इससे अधिक से अधिक ग्राहक डिजिटल बैंकिंग से जुड़ेंगे।

निष्कर्ष

यूको बैंक के लिए डिजिटल बैंकिंग केवल मोबाइल ऐप या सॉफ्टवेयर नहीं है, बल्कि ग्राहकों को तेज, सुरक्षित और सुविधाजनक सेवाएँ प्रदान करने की एक मजबूत प्रतिबद्धता है।

यदि हम लगातार नई डिजिटल सेवाएँ विकसित करते रहें, ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझकर उन्हें बेहतर समाधान दें और डिजिटल तकनीक का प्रभावी उपयोग करें , तो यूको बैंक आने वाले समय में एक आधुनिक , विश्वसनीय और ग्राहक-केंद्रित बैंक के रूप में और अधिक मजबूत बनकर उभरेगा। इस प्रकार देश का हर ग्राहक अपने घर या कार्यालय से ही सरल , सुरक्षित और सुविधाजनक बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकेगा।

सागर पीपावत
प्रबंधक (सू.प्रौद्योगिकी)
अंचल कार्यालय मेरठ

आलेख

एटीएम स्थल एवं आधारभूत संरचना का रखरखाव

एटीएम स्थल एवं आधारभूत संरचना रख-रखाव के मुख्य बिंदु:

1. LAN और पावर केबल को सुरक्षित ढककर रखें
शाखा यह सुनिश्चित करे कि LAN केबल, पावर केबल, स्विच बोर्ड तथा I/O बॉक्स को अच्छी तरह से ढककर रखा जाए, ताकि कोई असामाजिक तत्व इनके साथ छेड़छाड़ या धोखाधड़ी न कर सके।

2. नकदी भरना एवं नोटों का सही विन्यास (Cash Loading & Denomination Configuration)
एटीएम और कैश रीसाइक्लर में समय पर नकदी भरी जाए तथा नोटों का सही विन्यास (Configuration) सुनिश्चित किया जाए।

3. रु.100 एवं रु.200 के नोट उपलब्ध रहें
शाखा यह सुनिश्चित करे कि एटीएम और कैश रीसाइक्लर से रु.100 और रु.200 के नोट भी निकलें। इसके लिए कैश कैसेट में नोटों का सही आवंटन (Cassette Allocation) और सही कॉन्फ़िगरेशन किया जाए, ताकि ग्राहकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो और बेहतर सेवा मिल सके।

4. परिसर की साफ-सफाई
एटीएम कक्ष की प्रतिदिन सफाई की जाए। इसमें मशीन, फर्श, दीवारें और कांच (ग्लास पैनल) भी साफ रखे जाएँ।

5. पर्याप्त रोशनी एवं उचित वेंटिलेशन
एटीएम कक्ष में हर समय पर्याप्त रोशनी होनी चाहिए। यदि एयर कंडीशनर उपलब्ध है तो वह सही स्थिति में कार्य करे तथा एग्जॉस्ट फैन भी चालू और कार्यशील रहे, ताकि उचित वेंटिलेशन बना रहे।

6. ग्लो साइन बोर्ड एवं अन्य संकेतक (Signage)
एटीएम के ग्लो साइन बोर्ड, लॉलीपॉप (Lollipop Sign) तथा अन्य सभी संकेतक (Signage) अच्छी स्थिति में हों और सही प्रकार से कार्य कर रहे हों।

अभिषेक त्यागी
प्रबंधक
अंबाला रोड सहारनपुर शाखा

कार्य और व्यक्तिगत जीवन का संतुलन : सफलता की वास्तविक पहचान

आज के प्रतिस्पर्धी दौर में हर व्यक्ति सफलता की दौड़ में आगे बढ़ना चाहता है। बेहतर प्रदर्शन करना, नई उपलब्धियाँ हासिल करना और अपनी जिम्मेदारियों का पूरी निष्ठा से निर्वहन करना हम सभी का लक्ष्य होता है। लेकिन इस दौड़ में अक्सर हम एक महत्वपूर्ण बात भूल जाते हैं कि जीवन केवल काम तक सीमित नहीं है।

बैंकिंग सेवा एक जिम्मेदारीपूर्ण और चुनौतीपूर्ण कार्य है। प्रतिदिन नए लक्ष्य, ग्राहकों की अपेक्षाएँ, समयबद्ध कार्य तथा अनेक महत्वपूर्ण निर्णय हमारी दिनचर्या का हिस्सा होते हैं। ऐसे में मानसिक दबाव और तनाव होना स्वाभाविक है। मेरा मानना है कि एक सफल बैंक अधिकारी वही है, जो अपने कार्य के साथ-साथ अपने परिवार, स्वास्थ्य और मानसिक शांति का भी समानरूप से ध्यान रखे।

परिवार हमारे जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है। पूरे दिन की व्यस्तता के बाद परिवार के साथ बिताए गए कुछ पल हमें नई ऊर्जा, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच प्रदान करते हैं। माता-पिता का आशीर्वाद, जीवनसाथी का सहयोग और बच्चों की मुस्कान हमें हर चुनौती का सामना करने की प्रेरणा देते हैं। यही छोटे-छोटे क्षण जीवन को सार्थक बनाते हैं।

इसी प्रकार अच्छा स्वास्थ्य भी सफलता की आधारशिला है। यदि शरीर स्वस्थ और मन प्रसन्न होगा, तभी हम अपने कार्य को पूरी क्षमता और उत्साह के साथ कर पाएँगे । नियमित व्यायाम, संतुलित भोजन, पर्याप्त नींद तथा अपने शौक के लिए थोड़ा समय निकालना हमारी दिनचर्या का आवश्यक हिस्सा होना चाहिए।

कार्यस्थल पर सकारात्मक वातावरण,टीम भावना और आपसी सहयोग भी उतना ही महत्वपूर्ण है। सहकर्मियों के प्रति सम्मान, ग्राहकों के प्रति संवेदनशीलता और ईमानदारी से किया गया कार्य न केवल संस्थान की प्रगति में योगदान देता है, बल्कि हमें आत्मसंतोष भी प्रदान करता है।

मेरा विश्वास है कि सफलता केवल पद, वेतन या उपलब्धियों से नहीं मापी जाती। वास्तविक सफलता तब होती है, जब हम अपने कार्य के प्रति समर्पित होने के साथ-साथ अपने परिवार के लिए समय निकालें, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें और जीवन के प्रत्येक पहलू में संतुलन बनाए रखें।

आइए, हम सभी यह संकल्प लें कि अपने दायित्वों का पूरी ईमानदारी और निष्ठा से निर्वहन करेंगे, साथ ही अपने परिवार, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत जीवन को भी समान महत्व देंगे क्योंकि जब जीवन में संतुलन होता है, तभी सफलता स्थायी, सार्थक और आनंददायक बनती है।

दो घड़ों की सीख

(प्रेरणादायक प्रसंग)

एक गाँव में एक किसान रोज़ नदी से पानी भरकर अपने घर लाता था। उसके पास दो घड़े थे। एक घड़ा बिल्कुल सही था, जबकि दूसरे घड़े में एक छोटी-सी दरार थी। हर दिन जब किसान नदी से लौटता, तो दरार वाले घड़े का कुछ पानी रास्ते में ही गिर जाता। इस कारण वह केवल आधा ही भरकर घर पहुँचता।

कई वर्षों तक यही चलता रहा। एक दिन दरार वाले घड़े से रहा नहीं गया। उसने किसान से कहा, "मुझे क्षमा कर दीजिए। मेरी कमी के कारण आपका आधा पानी रास्ते में ही बह जाता है। मैं आपके लिए पूरी तरह उपयोगी नहीं हूँ।"
किसान मुस्कुराया और बोला, "आज लौटते समय रास्ते के किनारे लगे फूलों को ध्यान से देखना।"

जब वे वापस लौटे, तो दरार वाले घड़े ने देखा कि उसके वाली तरफ़ रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे, जबकि दूसरी ओर ऐसा कुछ नहीं था।
घर पहुँचकर किसान ने कहा, "मैं तुम्हारी दरार के बारे में पहले से जानता था। इसलिए मैंने उसी तरफ़ फूलों के बीज बो दिए थे। तुम्हारे रिसते हुए पानी से वे रोज़ सींचे जाते रहे। आज उन्हीं फूलों से मैं भगवान की पूजा करता हूँ, घर सजाता हूँ और राहगीरों के चेहरे पर मुस्कान लाता हूँ। यदि तुम्हारे भीतर यह 'कमी' न होती, तो यह सुंदरता कभी जन्म ही नहीं लेती।"

सीख:
जीवन में हर व्यक्ति में कोई न कोई कमी होती है, लेकिन वही कमी यदि सही दिशा और सकारात्मक सोच के साथ स्वीकार की जाए, तो वह किसी की सबसे बड़ी ताकत बन सकती है। इसलिए अपनी कमियों से निराश होने के बजाय, उन्हें अपनी विशेषता में बदलने का प्रयास करना चाहिए। यही दृष्टिकोण सफलता और आत्मविश्वास का मार्ग प्रशस्त करता है।

सोनिया श्योरान
प्रबंधक
बागपत रोड मेरठ शाखा

आलेख

युवाओं का अकेलापन : विकास के दौर की एक मौन त्रासदी

आधुनिक युग को विकास ,तकनीकी उन्नति और वैश्विक संपर्क का युग कहा जाता है। आज मनुष्य के पास संवाद और संचार के ऐसे साधन उपलब्ध हैं, जिनकी कल्पना कुछ दशक पहले तक असंभव प्रतीत होती थी।

इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया ने दुनिया को मानो एक छोटे से गाँव में बदल दिया है। लोग हजारों किलोमीटर दूर बैठे व्यक्तियों से कुछ ही क्षणों में संवाद स्थापित कर सकते हैं। किंतु इस अभूतपूर्व प्रगति के बीच एक ऐसा विरोधाभास उभरकर सामने आया है , जिसने समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाविदों को चिंतित कर दिया है । यह विरोधाभास है – युवाओं में बढ़ता अकेलापन।

विडंबना यह है कि जो पीढ़ी तकनीकी रूप से सबसे अधिक जुड़ी हुई दिखाई देती है , वही भावनात्मक रूप से सबसे अधिक अलग-थलग पड़ती जा रही है । बाहरी दुनिया में सक्रिय और आत्मविश्वासी दिखने वाले अनेक युवा भीतर ही भीतर अकेलेपन, असुरक्षा और मानसिक तनाव से जूझ रहे हैं। यह समस्या केवल किसी एक देश या समाज तक सीमित नहीं है , बल्कि विश्वव्यापी चुनौती बन चुकी है। इसलिए युवाओं के अकेलेपन को केवल व्यक्तिगत कमजोरी मानकर अनदेखा नहीं किया जा सकता, बल्कि इसे सामाजिक और मानवीय दृष्टि से समझना आवश्यक है।

अकेलापन क्या है?

अकेलापन केवल शारीरिक रूप से अकेले होने की स्थिति नहीं है। कई बार व्यक्ति लोगों की भीड़ में रहकर भी स्वयं को अकेला महसूस करता है। वास्तव में अकेलापन वह भावनात्मक स्थिति है, जब व्यक्ति को यह महसूस होता है कि उसकी भावनाओं को समझने वाला कोई नहीं है , उसकी बात सुनने वाला कोई नहीं है और वह अपने अनुभवों को किसी के साथ साझा नहीं कर पा रहा है।

युवाओं के संदर्भ में यह स्थिति और अधिक गंभीर हो जाती है क्योंकि यह जीवन का वह चरण है जब व्यक्ति अपनी पहचान , करियर, संबंधों और भविष्य को लेकर अनेक प्रश्नों से गुजर रहा होता

है। ऐसे समय में भावनात्मक सहयोग और संवाद की आवश्यकता सबसे अधिक होती है।

युवाओं में बढ़ते अकेलेपन के कारण

1. तीव्र प्रतिस्पर्धा और सफलता का दबाव

आज का समय प्रतियोगिता का समय है। प्रत्येक युवा अपने जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता है। विद्यालयों , महाविद्यालयों और रोजगार के क्षेत्र में लगातार बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने युवाओं पर अत्यधिक मानसिक दबाव डाल दिया है।

अच्छे अंक लाना , प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश पाना, आकर्षक नौकरी हासिल करना और समाज में सफल दिखना—ये सभी अपेक्षाएँ युवाओं के मन पर निरंतर प्रभाव डालती हैं। इस दौड़ में वे मित्रता, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक सहभागिता के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पाते । धीरे-धीरे उनका सामाजिक दायरा सीमित होता जाता है और वे स्वयं को अकेला महसूस करने लगते हैं।

2. सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव

सोशल मीडिया को अक्सर लोगों को जोड़ने वाला माध्यम माना जाता है , किंतु इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं। आज का युवा घंटों इंस्टाग्राम, फेसबुक, यूट्यूब और अन्य डिजिटल मंचों पर समय बिताता है।

इन मंचों पर लोग अपने जीवन के केवल सुंदर और सफल पक्षों को प्रस्तुत करते हैं। जब युवा दूसरों की उपलब्धियों , यात्राओं, सफलताओं और सुखद क्षणों को देखते हैं, तो वे अपने जीवन की तुलना उनसे करने लगते हैं। परिणामस्वरूप उनमें हीन भावना , असंतोष और अकेलेपन की भावना विकसित होने लगती है।

इसके अतिरिक्त ऑनलाइन मित्रता अक्सर वास्तविक संबंधों की गहराई प्रदान नहीं कर पाती। हजारों "फॉलोअर्स" होने के बावजूद कई युवाओं के पास ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होता जिससे वे अपने मन की बात खुलकर कह सकें।

3. संयुक्त परिवारों का विघटन

भारतीय समाज में संयुक्त परिवार लंबे समय तक भावनात्मक सुरक्षा और सामाजिक सहयोग का आधार रहे हैं। परिवार के विभिन्न सदस्य जीवन के अनुभव साझा करते थे और बच्चों तथा युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करते थे।
लेकिन आधुनिक जीवनशैली और रोजगार संबंधी कारणों से संयुक्त परिवारों की संख्या कम होती जा रही है। एकल परिवारों में रहने वाले युवा अक्सर अपने दादा-दादी , चाचा-चाची और अन्य रिश्तेदारों से दूर हो जाते हैं।
परिणामस्वरूप उन्हें भावनात्मक सहारा कम मिलता है और अकेलेपन की भावना बढ़ती है।

4. शहरीकरण और प्रवास

उच्च शिक्षा और रोजगार की तलाश में लाखों युवा अपने घरों और शहरों को छोड़कर नए स्थानों पर जाते हैं। नए वातावरण में समायोजन करना आसान नहीं होता। परिवार और पुराने मित्रों से दूर रहने के कारण वे भावनात्मक रूप से अकेलापन अनुभव करते हैं।

विशेष रूप से महानगरों में जीवन की तेज गति और व्यस्तता के कारण लोगों के पास एक-दूसरे के लिए समय कम होता है। ऐसे में नए संबंध बनाना और उन्हें बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

5. संवाद की कमी

आज तकनीकी साधनों ने बातचीत को आसान बनाया है, किंतु सार्थक संवाद कम होता जा रहा है। परिवार के सदस्य एक ही घर में रहते हुए भी अक्सर अपने-अपने मोबाइल फोन और डिजिटल उपकरणों में व्यस्त रहते हैं।

जब संवाद कम होता है , तो भावनात्मक दूरी बढ़ती है । युवा अपनी समस्याओं , आशंकाओं और भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाते , जिससे

अकेलापन और गहरा होता जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

युवाओं का अकेलापन केवल भावनात्मक समस्या नहीं है , बल्कि इसका सीधा प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है।

लगातार अकेलापन व्यक्ति में चिंता , तनाव, अवसाद और आत्मविश्वास की कमी उत्पन्न कर सकता है। कई युवा स्वयं को समाज से कटे हुए अनुभव करने लगते हैं। उनका आत्मसम्मान प्रभावित होता है और वे अपनी क्षमताओं पर संदेह करने लगते हैं।

कुछ मामलों में यह स्थिति इतनी गंभीर हो जाती है कि व्यक्ति जीवन के प्रति निराशा महसूस करने लगता है। इसलिए मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ अकेलेपन को एक महत्वपूर्ण सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी चुनौती मानते हैं।

शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

अनेक शोध यह दर्शाते हैं कि लंबे समय तक रहने वाला अकेलापन केवल मानसिक ही नहीं, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है।

लगातार तनाव के कारण नींद की समस्याएँ , सिरदर्द, थकान, उच्च रक्तचाप तथा प्रतिरक्षा प्रणाली की कमजोरी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। जब मन स्वस्थ नहीं रहता , तो उसका प्रभाव शरीर पर भी दिखाई देने लगता है।

शिक्षा और करियर पर प्रभाव

अकेलापन युवाओं की शैक्षणिक उपलब्धियों और व्यावसायिक विकास को भी प्रभावित करता है। जो युवा भावनात्मक रूप से असुरक्षित महसूस करते हैं , उनका ध्यान पढ़ाई या कार्य पर कम केंद्रित हो पाता है।

वे सामूहिक गतिविधियों में भाग लेने से बचते हैं, नए अवसरों को अपनाने में हिचकिचाते हैं और सामाजिक कौशल विकसित नहीं कर पाते। इससे उनकी व्यक्तिगत और व्यावसायिक प्रगति बाधित हो सकती है।

परिवार की भूमिका

युवाओं के अकेलेपन को कम करने में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।
माता-पिता को केवल बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय उनकी भावनात्मक आवश्यकताओं को भी समझना चाहिए । बच्चों के साथ नियमित संवाद , उनकी समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनना और बिना आलोचना किए उन्हें अपनी बात कहने का अवसर देना आवश्यक है।

परिवार यदि प्रेम , विश्वास और सहयोग का वातावरण प्रदान करे , तो युवा स्वयं को सुरक्षित और समर्थ महसूस करते हैं।

शैक्षणिक संस्थानों की जिम्मेदारी

विद्यालय और महाविद्यालय केवल शिक्षा देने के केंद्र नहीं हैं , बल्कि व्यक्तित्व निर्माण के महत्वपूर्ण मंच भी हैं।

शैक्षणिक संस्थानों को ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए जहाँ छात्र खुलकर संवाद कर सकें । खेल, सांस्कृतिक गतिविधियाँ , साहित्यिक मंच , परामर्श सेवाएँ और समूह चर्चाएँ युवाओं को सामाजिक रूप से सक्रिय बनाने में सहायक हो सकती हैं।

इसके साथ ही मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए जाने चाहिए।

समाज की भूमिका

समाज को भी युवाओं के अकेलेपन को गंभीरता से समझना होगा। अक्सर हम युवाओं से केवल सफलता की अपेक्षा करते हैं , लेकिन उनकी भावनात्मक चुनौतियों को अनदेखा कर देते हैं ।

सामाजिक संस्थाओं, सांस्कृतिक संगठनों और सामुदायिक समूहों को ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए जहाँ युवा अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकें, नए मित्र बना सकें और सामाजिक जुड़ाव महसूस कर सकें।

समाधान की दिशा

युवाओं के अकेलेपन को दूर करने के लिए बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता है–

- परिवार में संवाद को बढ़ावा दिया जाए।
- सोशल मीडिया के संतुलित उपयोग को प्रोत्साहित किया जाए।
- मानसिक स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़ाई जाए।
- युवाओं को खेल, साहित्य, संगीत और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर दिए जाएँ।
- विद्यालयों और महाविद्यालयों में परामर्श केंद्र स्थापित किए जाएँ।
- मित्रता और मानवीय संबंधों के महत्व को समझाया जाए।
- युवाओं को अपनी भावनाएँ व्यक्त करने के लिए सुरक्षित वातावरण प्रदान किया जाए।

निष्कर्ष

युवाओं का अकेलापन आधुनिक विकास की सबसे बड़ी और सबसे कम दिखाई देने वाली त्रासदियों में से एक है। यह समस्या केवल किसी व्यक्ति विशेष की नहीं, बल्कि पूरे समाज की चिंता है। यदि हम तकनीकी प्रगति के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं और संबंधों को महत्व नहीं देंगे, तो हमारा विकास अधूरा रह जाएगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम युवाओं को केवल भविष्य का नागरिक या आर्थिक संसाधन न मानें, बल्कि एक संवेदनशील मनुष्य के रूप में देखें, जिसकी भावनाएँ, आशाएँ, भय और संघर्ष भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। जब परिवार, समाज और संस्थाएँ मिलकर युवाओं को समझने और उनका साथ देने का प्रयास करेंगी, तभी हम इस मौन त्रासदी को कम कर पाएँगे और एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकेंगे जो तकनीकी रूप से समृद्ध होने के साथ-साथ भावनात्मक रूप से भी संपन्न हो।

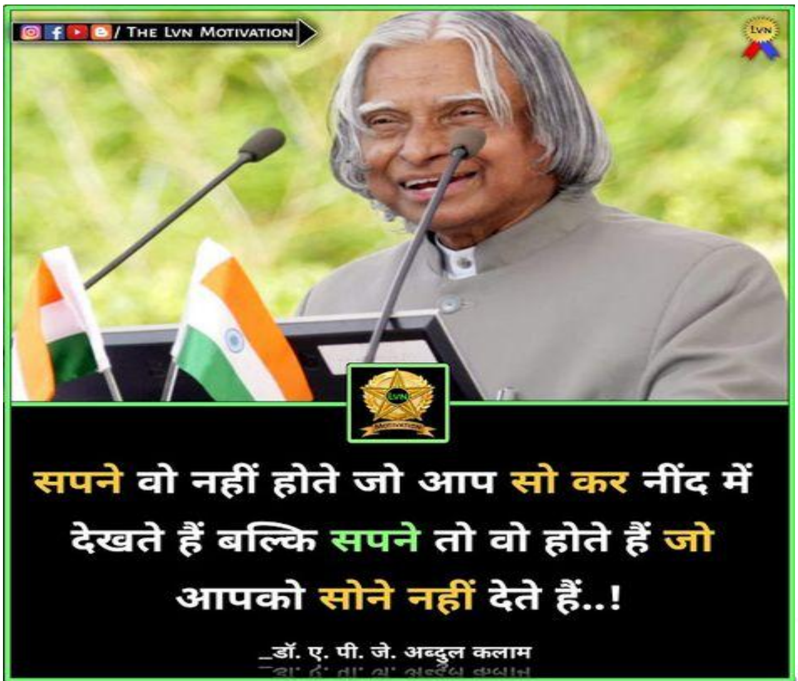

सीमा मौर्या
सहायक प्रबंधक
शास्त्रीनगर मेरठ शाखा

आलेख

डिजिटल युग और संवाद की संस्कृति

आज का युग संचार का युग कहलाता है। हमारे हाथ में स्मार्टफ़ोन है, इंटरनेट है, सोशल मीडिया है और दुनिया भर के लोगों से जुड़ने के अनगिनत साधन हैं। फिर भी एक प्रश्न बार-बार मन में उठता है—क्या हम वास्तव में पहले से अधिक संवाद कर रहे हैं या केवल संदेशों का आदान-प्रदान कर रहे हैं? लोग आमने-सामने बातचीत करने के बजाय मोबाइल और सोशल मीडिया में अधिक व्यस्त हैं, जिससे भावनात्मक जुड़ाव और आपसी समझ प्रभावित हो रही है।

कुछ वर्ष पहले तक परिवार में भोजन के समय सब लोग साथ बैठते थे। दिनभर की घटनाएँ साझा होती थीं, हँसी-मज़ाक होता था और छोटी-छोटी समस्याओं का समाधान बातचीत से निकल आता था। आज वही दृश्य बदल गया है। एक ही कमरे में बैठे लोग भी अपने-अपने मोबाइल की स्क्रीन में व्यस्त रहते हैं। शब्द कम हो गए हैं और इमोजी अधिक। संदेश तुरंत पहुँच जाते हैं, लेकिन भावनाएँ अक्सर अधूरी रह जाती हैं।डिजिटल माध्यमों में अक्सर भावनाएँ और आशय स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं हो पाते, जिससे भ्रम या दूरी पैदा हो सकती है।

संवाद केवल बोलना नहीं, बल्कि सुनना और समझना भी है। जब हम किसी की बात ध्यान से सुनते हैं, तब विश्वास पैदा होता है। परिवार, मित्रता, कार्यस्थल और समाज—हर संबंध की नींव संवाद पर ही टिकी होती है। जहाँ बातचीत रुक जाती है, वहाँ गलतफहमियाँ जन्म लेने लगती हैं। सच्चा और संवेदनशील संवाद ही मजबूत संबंधों और बेहतर समाज की नींव है। इसलिए तकनीक का उपयोग करते हुए भी मानवीय संवाद को जीवित रखना आवश्यक है।

कार्यस्थलों पर भी प्रभावी संवाद सफलता की कुंजी है। किसी संस्था की प्रगति केवल योजनाओं से नहीं, बल्कि टीम के सदस्यों के बीच स्पष्ट और सकारात्मक संवाद से होती है। एक छोटी-सी सराहना, धन्यवाद या प्रोत्साहन का शब्द कर्मचारियों में नया उत्साह भर सकता है। वहीं अस्पष्ट या कठोर संवाद अच्छे वातावरण को भी प्रभावित कर सकता है।

बच्चों के विकास में भी संवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि माता-पिता प्रतिदिन कुछ समय बच्चों के साथ बिना किसी स्क्रीन के बिताएँ, उनकी बातें सुनें और अपने अनुभव साझा करें, तो बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है। वे अपनी समस्याएँ खुलकर बताते हैं और परिवार से उनका भावनात्मक जुड़ाव मजबूत होता है।

आज आवश्यकता इस बात की नहीं कि हम तकनीक से दूरी बना लें, बल्कि यह है कि हम तकनीक और मानवीय संबंधों के बीच संतुलन स्थापित करें। दिन का कुछ समय ऐसा अवश्य

होना चाहिए जब मोबाइल एक ओर रखकर हम अपनों से खुलकर बातें करें। किसी मित्र का हाल केवल संदेश भेजकर नहीं , बल्कि फ़ोन या मुलाक़ात के माध्यम से पूछें। कभी-कभी एक सच्ची बातचीत वह काम कर जाती है , जो सैकड़ों संदेश नहीं कर पाते।

अंततः, मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति उसकी संवेदनशीलता और संवाद करने की क्षमता है।

यदि हम इस क्षमता को जीवित रख पाए तो न केवल हमारे संबंध अधिक सशक्त होंगे , बल्कि समाज भी अधिक आत्मीय , विश्वासपूर्ण और मानवीय बनेगा। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में यदि हम संवाद की संस्कृति को बचाए रख सकें , तो यही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

टिप्पणी

1. Accepted conditionally	सशर्त स्वीकृत
2. By all means	किसी भी प्रकार से
3. Delay regretted	विलंब के लिए खेद है
4. Duly filled in	विधिवत् भरा हुआ
5. For perusal	अवलोकनार्थ
6. Issue may be discussed	मामले पर विचार किया जाए
7. Keep pending	इस पर कार्रवाई अभी स्थगित रखें
8. May be treated as urgent	इसे आवश्यक समझें
9. Mentioned above	उपर्युक्त
10. On account of	के कारण
11. Please appear in person	कृपया स्वयं उपस्थित हों
12. Recommended	संस्तुत, सिफ़ारिश की जाती है
13. Signed	हस्ताक्षरित
14. Whichever is earlier	जो भी पहले हो
15. With regards	सादर

कहानी

प्रतिभा रतन
वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.)
अंचल कार्यालय मेरठ

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

रोज़ सुबह छह बजे शहर के एक पुराने पार्क में एक युवक टहलने आता था। उसका नाम था रमन। उम्र कोई अट्ठाईस-तीस साल रही होगी। हाथ में पानी की बोतल, कानों में ईयरफोन और चेहरे पर हमेशा एक अजीब-सी बेचैनी।

पार्क में आने वाले लोगों के लिए वह बस एक नियमित चेहरा था। लेकिन एक व्यक्ति था जो पिछले कई वर्षों से उसे चुपचाप देख रहा था। सफ़ेद बाल, हल्की मुस्कान और शांत स्वभाव वाले एक बुज़ुर्ग—सब उन्हें प्यार से "शर्मा अंकल" कहते थे।

एक सुबह उन्होंने रमन को रोक लिया।

"बेटा, कई दिनों से देख रहा हूँ। तुम्हारा शरीर तो यहाँ घूमता है, लेकिन मन कहीं और भटकता रहता है। क्या बात है?"

रमन हल्का-सा मुस्कुराया, फिर बोला, "कुछ नहीं अंकल... बस नौकरी से मन ऊब गया है।"

"ऊब गया? क्यों?"

"ऑफिस की वही रोज़ की भागदौड़, वही तनाव, वही राजनीति... मन नहीं लगता। हमेशा लगता है कि अपना कोई काम करूँ, अपना बिज़नेस शुरू करूँ।"

"तो फिर शुरू क्यों नहीं करते?"

रमन ने लंबी साँस ली।

"आइडिया है मेरे पास। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं अच्छा बिज़नेस कर सकता हूँ। लेकिन डर लगता है... अगर सब पैसे डूब गए तो? अगर असफल हो गया तो? नौकरी भी चली जाएगी और जमा-पूँजी भी। यही डर मुझे हर बार रोक देता है।"

शर्मा अंकल मुस्कुराए।

"बस इतनी-सी बात?"

रमन ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा।

"कल इसी समय मिलना," अंकल ने कहा।

अगले दिन दोनों फिर पार्क में मिले।

शर्मा अंकल ने जेब से एक छोटा-सा लिफाफा निकाला और उसे रमन के हाथ में रखते हुए बोले, "इसमें कुछ नहीं है। लेकिन आज मैं तुमसे एक वादा करता हूँ। तुम अपना बिज़नेस शुरू करो। जितनी मेहनत करनी है, पूरी ईमानदारी से करना। और यदि कभी ऐसा समय आए कि सब

कुछ खत्म हो जाए... पूरा बिज़नेस डूब जाए... तो याद रखना , पचास लाख रुपये तुम्हारे पीछे खड़े हैं।

वो पचास लाख मैं तुम्हें दूँगा। इसलिए डरना मत।"

रमन हक्का-बक्का रह गया।

"नहीं अंकल , मैं इतने बड़े पैसे कैसे ले सकता हूँ?"

"ले नहीं रहे हो... बस इतना समझ लो कि ज़रूरत पड़ी तो मिल जाएँगे। इसलिए डर को अपने फैसलों का मालिक मत बनने दो।"

उस दिन पहली बार रमन को लगा कि उसके पीछे कोई खड़ा है।

कुछ ही महीनों बाद उसने नौकरी छोड़ दी और अपना छोटा-सा व्यवसाय शुरू कर दिया।

शुरुआत आसान नहीं थी।

कभी ऑर्डर मिले, कभी नहीं। कभी मुनाफ़ा हुआ, कभी घाटा। कभी रात-रात भर जागकर काम करना पड़ा, तो कभी कर्मचारियों की तनख्वाह की चिंता सताई। लेकिन हर कठिन समय में एक ही बात उसके कानों में गूँजती—

"पचास लाख तुम्हारे पीछे खड़े हैं।"

यही सोच उसे टूटने नहीं देती थी। धीरे-धीरे उसका व्यवसाय बढ़ने लगा। एक दुकान से दो हुईं। दो से चार। फिर अपना ऑफिस, अपनी टीम और शहर में उसकी एक अलग पहचान बन गई।

लगभग दस साल बीत गए। एक दिन अचानक उसे शर्मा अंकल की याद आई।

उसने सोचा, "भगवान की कृपा से मुझे कभी उन पैसों की ज़रूरत नहीं पड़ी। लेकिन मेरा फ़र्ज़ बनता है कि आज जाकर उनका धन्यवाद करूँ।" वह मिठाई और पचास लाख रुपये का चेक लेकर उनके घर पहुँचा। दरवाज़ा एक युवक ने खोला।

"जी?"

"मैं शर्मा जी से मिलने आया हूँ।"

युवक की आँखें नम हो गईं।

"आप शायद देर से आए हैं... पिताजी को गुज़रे हुए तीन साल हो चुके हैं।"

रमन का दिल बैठ गया।

उसने बैठकर पूरी कहानी सुनाई —पार्क की मुलाक़ातें, बिज़नेस, पचास लाख का वादा और अपनी सफलता। फिर उसने चेक आगे बढ़ाते हुए कहा, "ये पैसे मैं लौटाने आया हूँ। मुझे उनकी कभी ज़रूरत नहीं पड़ी।"

युवक कुछ क्षण चुप रहा। फिर मुस्कुराया।

"क्या मैं आपको एक सच बताऊँ?"

"जी?"

"मेरे पिताजी के पास कभी पचास लाख रुपये थे ही नहीं।"

रमन स्तब्ध रह गया।

"क्या...?"

"हाँ। बचपन से मैं उन्हें लोगों की बातें सुनते देखता था। जब भी उन्हें कोई ऐसा इंसान मिलता, जो सिर्फ डर की वजह से आगे नहीं बढ़ पा रहा होता, तो वे यही कहते थे—'पचास लाख

मेरे पास रखे हैं, चिंता मत करो।'

आप पहले नहीं हैं। आप जैसे कई लोग यहाँ आ चुके हैं। और हर कोई यही कहता है कि उस भरोसे ने उसकी ज़िंदगी बदल दी।"

रमन की आँखें भर आईं।

"तो... उन्होंने झूठ बोला था?"

युवक ने धीरे से कहा,

"नहीं...

उन्होंने झूठ नहीं बोला।

उन्होंने लोगों को **पैसे नहीं ,हिम्मत उधार दी थी।**

उन्हें मालूम था कि अधिकांश लोगों को धन की नहीं, विश्वास की कमी होती है।

उन्हें सिर्फ यह एहसास चाहिए होता है कि 'अगर मैं गिरा, तो कोई मुझे संभाल लेगा।'

बस वही एहसास इंसान को अपने डर से बड़ा बना देता है।"

रमन के हाथ से चेक धीरे-धीरे नीचे हो गया।

आज उसे समझ आया कि उसकी सफलता की असली पूँजी पचास लाख रुपये नहीं थे...

वो विश्वास था ,जिसने उसके डर को छोटा कर दिया था।

घर लौटते समय उसने आसमान की ओर देखा और मन ही मन शर्मा अंकल को धन्यवाद दिया।

उस दिन उसे जीवन का सबसे बड़ा सत्य समझ में आया—

अक्सर हमारी सबसे बड़ी लड़ाई परिस्थितियों से नहीं, अपने डर से होती है।

जिस दिन मन विश्वास कर ले कि "मैं संभल जाऊँगा", उसी दिन कदम आगे बढ़ जाते हैं।

इसीलिए कहा गया है—

"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत"

और सच तो यह है—

जीत पहले दिमाग में पैदा होती है , उसके बाद ही ज़िंदगी में दिखाई देती है।

कभी-कभी सफलता के लिए करोड़ों रुपये नहीं , केवल इतना विश्वास ही काफी होता है कि **"मैं अकेला नहीं हूँ।"**

क्योंकि दुनिया में सबसे बड़ी पूँजी धन नहीं, **हौसला** है।

मेघना शर्मा
सहायक प्रबंधक
मथुरा शाखा

कहानी

लेट गो: खुशहाल जीवन का रहस्य

राधिका एक सरकारी बैंक में अधिकारी थी। वह अपने काम के प्रति बेहद ईमानदार और जिम्मेदार थी। सुबह समय पर बैंक पहुँचती , ग्राहकों की समस्याएँ सुनती , दस्तावेज़ जाँचती , ऋण संबंधी फाइलें देखती और दिनभर कई तरह की जिम्मेदारियाँ निभाती। घर लौटने के बाद भी वह एक अच्छी बहू , पत्नी और माँ की भूमिका पूरी निष्ठा से निभाती थी।

लेकिन उसकी एक आदत उसके जीवन की सबसे बड़ी परेशानी बन गई थी—वह हर बात को अपने मन में बैठा लेती थी।

यदि किसी ग्राहक ने गुस्से में कुछ कह दिया , तो वह पूरे दिन उसी बात को सोचती रहती। यदि किसी वरिष्ठ अधिकारी ने किसी छोटी-सी गलती पर टोक दिया , तो उसे लगता कि उसकी मेहनत की कोई कीमत ही नहीं। किसी सहकर्मी को प्रशंसा मिल जाती , तो वह खुद को कम आँकने लगती। घर पहुँचने के बाद भी उसका मन बैंक की बातों में ही उलझा रहता।

धीरे-धीरे इसका असर उसके स्वास्थ्य और रिश्तों पर भी दिखने लगा। घर पर रहते हुए भी उसका ध्यान कहीं और रहता। बच्चे कुछ पूछते , तो वह अनमने मन से जवाब देती। पति उससे बातें करते, लेकिन उसका मन अब भी ऑफिस की किसी घटना में अटका रहता। रात को भी वह बार-बार वही बातें सोचती रहती और ठीक से सो नहीं पाती थी।

एक दिन बैंक में काम का बहुत दबाव था। कई ग्राहक एक साथ आए हुए थे। तभी एक बुज़ुर्ग ग्राहक, जिनका नाम वर्मा जी था , किसी तकनीकी समस्या के कारण नाराज़ हो गए और ऊँची आवाज़ में बोलने लगे। राधिका ने पूरी शांति से उनकी समस्या हल कर दी।

काम खत्म होने के बाद वर्मा जी वापस आए। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा , "बेटी, सुबह मैं गुस्से में था। मुझे तुमसे इस तरह बात नहीं करनी चाहिए थी।"

राधिका ने मुस्कुराकर कहा , "कोई बात नहीं अंकल।"

वर्मा जी ने कहा , "अगर तुम सुबह की मेरी बात को मन में रख लेतीं , तो शायद अभी भी परेशान होतीं। लेकिन तुमने उसे वहीं छोड़ दिया , इसलिए मुस्कुरा पा रही हो।" उनकी बात सुनकर राधिका कुछ देर सोचती रही।

उसी शाम उसकी शाखा की वरिष्ठ प्रबंधक ने भी उससे कहा, "राधिका, बैंक का काम बैंक तक ही रहने दो। हर दिन नई चुनौतियाँ आएँगी। अगर हर बात को घर लेकर जाओगी , तो न ऑफिस में

खुश रह पाओगी और न घर में। सफल वही होता है जो ज़रूरी बातों से सीख ले और बाकी बातों को लेट गो करना सीख जाए।"

यह बात राधिका के दिल को छू गई। अगले दिन से उसने एक नया नियम बनाया। बैंक से निकलने से पहले वह अपनी डायरी में उस दिन की सीख लिखती और मन ही मन कहती, "आज की चिंता यहीं खत्म। कल एक नया दिन होगा।"

यदि कोई ग्राहक नाराज़ हो जाता, तो वह उसे व्यक्तिगत अपमान नहीं मानती। यदि किसी गलती पर उसे समझाया जाता, तो वह उसे सीख की तरह स्वीकार करती। यदि काम का दबाव होता, तो वह खुद को याद दिलाती कि हर दिन एक जैसा नहीं होता।

कुछ महीनों बाद उसके जीवन में बड़ा बदलाव आ चुका था। वह पहले से अधिक शांत, आत्मविश्वासी और प्रसन्न रहने लगी। ऑफिस में उसका प्रदर्शन भी बेहतर हो गया और घर में भी वह अपने परिवार के साथ हँसते-मुस्कुराते समय बिताने लगी।

एक दिन उसकी नई सहकर्मी बहुत परेशान होकर उसके पास आई। उसने कहा, "मैम, आज एक ग्राहक ने मुझे बहुत डाँट दिया। मेरा मन कर रहा है कि नौकरी छोड़ दूँ।"

राधिका मुस्कुराई और बोली, "हर बात को अपने दिल तक मत पहुँचने दो। कुछ बातें केवल परिस्थिति होती हैं, तुम्हारी पहचान नहीं। उनसे सीखो, लेकिन उन्हें अपने मन में मत बसाओ। लेट गो करना सीखो। तभी तुम अपने काम और जीवन दोनों में खुश रह पाओगी।"

उस दिन राधिका को एहसास हुआ कि लेट गो करना कमज़ोरी नहीं, बल्कि मानसिक मजबूती की निशानी है। जो व्यक्ति हर दिन की नकारात्मक बातों को वहीं छोड़कर आगे बढ़ना सीख जाता है, वही अपने काम, अपने रिश्तों और अपने जीवन में सच्ची खुशी पा सकता है।

सीख:

"काम और जीवन में हर दिन नई चुनौतियाँ आती हैं। लेट गो का अर्थ हार मानना या भूल जाना नहीं, बल्कि मन के अनावश्यक बोझ को उतारकर नई ऊर्जा, सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना है। जो बीत गया, उसे पीछे छोड़ दीजिए; लेकिन अपने सपनों, अपने रिश्तों और अपने प्रयासों को कभी मत छोड़िए। यही खुशहाल, शांत और सफल जीवन का सबसे बड़ा रहस्य है।"

विभिन्न नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन

यूको बैंक अंचल कार्यालय मेरठ द्वारा दिनांक 23 मार्च 2026 को बरेली , सहारनपुर, बागपत, अलीगढ़, मुजफ्फरनगर एवं बुलंदशहर नराकासों के संयुक्त तत्वावधान में "विश्व स्तर पर हिंदी के बढ़ते कदम" विषय पर एक ऑनलाइन हिंदी संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल प्रमुख एवं उप महाप्रबंधक श्री जावेद ने की।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती प्रतिभा रतन (वरिष्ठ प्रबंधक , राजभाषा) के स्वागत संबोधन से हुआ । उन्होंने हिंदी के महत्व तथा प्रशासनिक कार्यों में उसके प्रभावी प्रयोग पर प्रकाश डाला । अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री जावेद, उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख ने हिंदी के वैश्विक विस्तार , डिजिटल मंचों पर उसकी बढ़ती उपस्थिति तथा बैंकिंग क्षेत्र में उसके महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. हेमलता, मुख्य प्रबंधक की गरिमामयी उपस्थिति रही। उन्होंने सफल आयोजन हेतु सभी को बधाई दी तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता पर बल दिया।

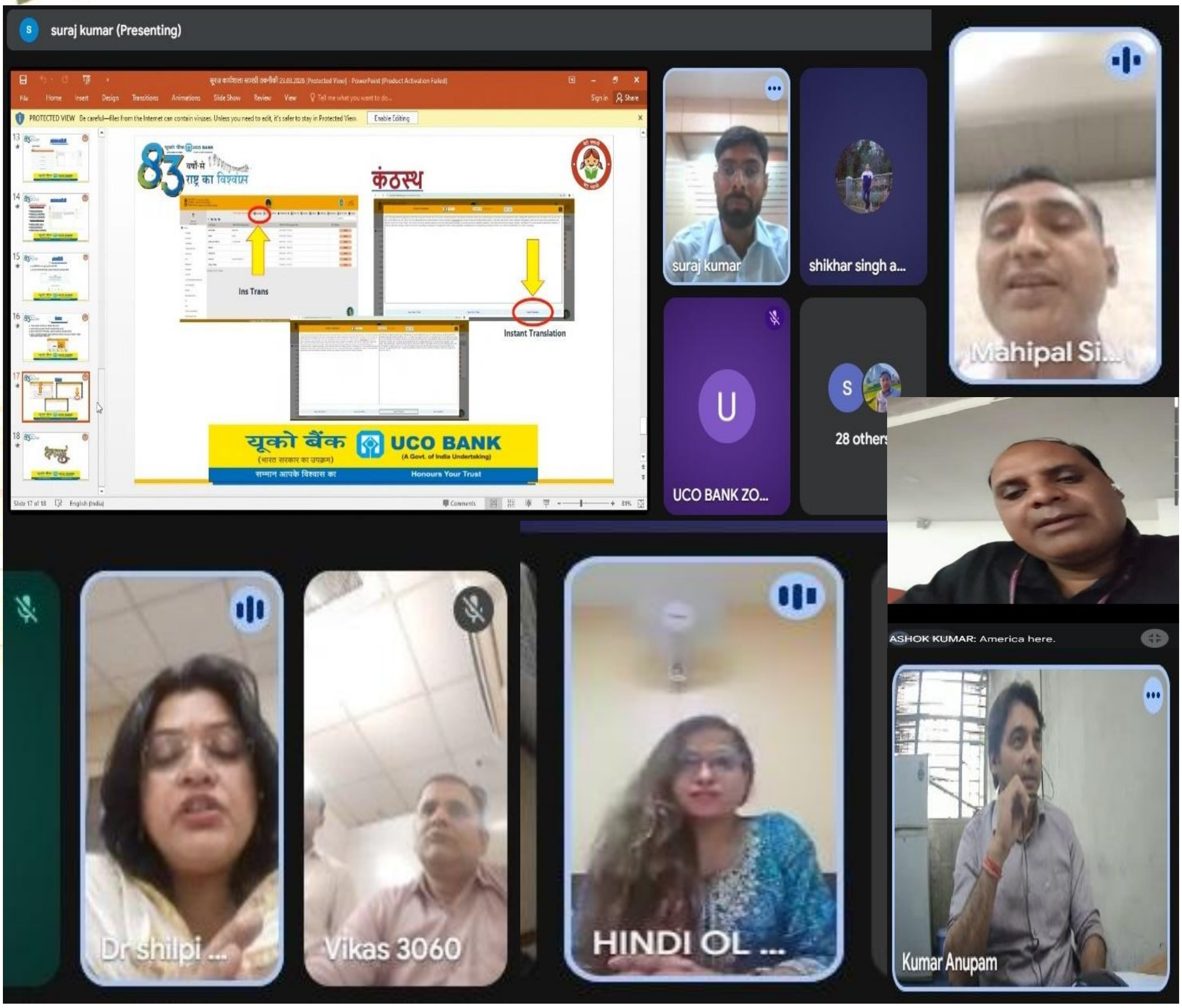

संगोष्ठी में विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए। डॉ. शिल्पी शुक्ला , वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), अंचल कार्यालय लखनऊ ने "वर्तमान परिदृश्य में हिंदी" विषय पर हिंदी की चुनौतियों एवं संभावनाओं पर चर्चा की। श्री सूरज , वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) , प्रधान कार्यालय , कोलकाता ने "हिंदी और तकनीकी" विषय पर डिजिटल युग में हिंदी की बढ़ती भूमिका को स्पष्ट किया। वहीं सुश्री नम्रता सिंह , वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), अंचल कार्यालय नई दिल्ली ने सोशल मीडिया , यूट्यूब, ओटीटी एवं बॉलीवुड में हिंदी की लोकप्रियता पर प्रकाश डाला।

विभिन्न सत्रों का समाहार श्री अशोक कुमार (सचिव, नराकास मुजफ्फरनगर), श्री महीपाल चौहान, (सचिव, नराकास बरेली), श्री अभय नाथ मिश्रा (सचिव , नराकास बागपत) तथा श्री कुमार अनुपम (सचिव, नराकास सहारनपुर) ने किया । संगोष्ठी में डॉ. अजय वर्धन आचार्य , क्षेत्रीय निदेशक , इग्नू (सचिव, नराकास अलीगढ़) तथा श्री इंद्रजीत प्रसाद शाह , सहायक प्रबंधक (रा.भा.) पंजाब नैशनल बैंक (सचिव, नराकास बुलंदशहर) भी उपस्थित थे। विभिन्न नराकासों के समन्वय से आयोजित यह संगोष्ठी हिंदी के वैश्विक महत्व और उसके प्रचार-प्रसार की दिशा में एक सार्थक पहल सिद्ध हुई। विभिन्न नराकासों के समन्वय से आयोजित यह संगोष्ठी हिंदी के वैश्विक महत्व और उसके प्रचार-प्रसार की दिशा में एक सार्थक पहल सिद्ध हुई।

यूको राजभाषा सम्मान

दिनांक 04.02.2026 को अंचल कार्यालय में "यूको राजभाषा सम्मान" का आयोजन किया गया । इस वर्ष "यूको राजभाषा सम्मान" योजना के अंतर्गत चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के 2 विद्यार्थियों – सुश्री तरन्नुम (सैंट जोसेफ्स गर्ल्स डिग्री कॉलेज, सरधना, मेरठ) तथा सुश्री सुमबुल (सैंट जोसेफ्स गर्ल्स डिग्री कॉलेज, सरधना, मेरठ) को रु.5000/ तथा स्मृतिका से सम्मानित किया गया।

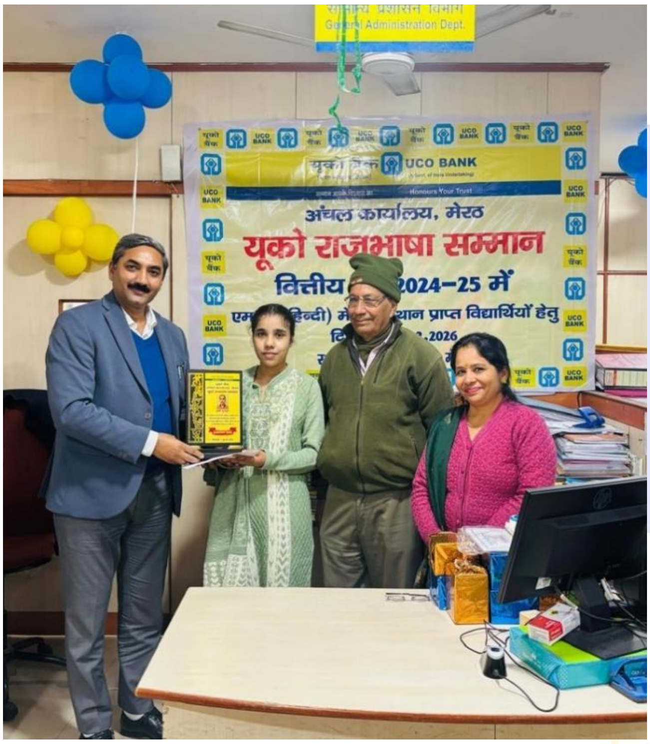

इस अवसर पर सैंट जोसेफ्स गर्ल्स डिग्री कॉलेज, सरधना, मेरठ के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. महेश पालीवाल जी तथा छात्राओं के परिवारजन भी उपस्थित थे ।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

दिनांक 21.02.2025 को अंचल कार्यालय मेरठ में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया।इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख श्री महेंद्र सिंह ने मातृभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला । इस अवसर पर कुछ स्टाफ सदस्यों ने हिमाचली, गढ़वाली, हरियाणवी तथा पंजाबी लोकगीत भी सुनाए।

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

राजभाषा अधिनियम , 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प , सामान्य आदेश , नियम , अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें , प्रेस विज्ञप्तियाँ, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष राखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें व सरकारी कागजात , संविदा , करार , अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में , अंग्रेजी और हिंदी , दोनों में जारी किए जाएं। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अंतर्गत ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का दायित्व यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे दस्तावेज़ हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार, निष्पादित अथवा जारी किए जाएं।

Under Section 3(3) of the Official Language Act, 1963, Resolutions, General Orders, Rules, Notifications, Administrative and Other Reports, Press Communiques, Administrative and Other Reports and Official Papers to be laid before a House or Houses of Parliament, Contract, Agreements, Licenses, Permits, Tender Notices and Tender Forms should invariably be issued bilingually both in Hindi and English. Under Rule 6 of the Official Language Rules, 1976, it shall be the responsibility of the person signing such documents to ensure that such documents are prepared, executed or issued in both Hindi and English languages.

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

अंचल कार्यालय मेरठ में दिनांक 27.10.2025 से 02.11.2025 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया । प्रधान कार्यालय के निदेशानुसार अंचल में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। अंचल कार्यालय समेत अंचल की समस्त शाखाओं के स्टाफ सदस्यों ने सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा ली तथा अच्छे आचरण का संकल्प लिया।

इस अवसर पर सतर्कता विभाग , प्रधान कार्यालय द्वारा जारी संदेश पढ़कर सुनाया गया तथा उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख जावेद की गरिमामयी उपस्थिति में अंचल कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों को सतर्कता संबंधी शपथ दिलवाई गई । स्टाफ सदस्यों ने सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा का प्रमाण-पत्र भी जनरेट किया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत अंचल कार्यालयों तथा शाखाओं द्वारा विभिन्न स्कूलों तथा कॉलेजों में भी कार्यक्रम आयोजित किए गए।

दधिची पब्लिक स्कूल में विषय “सतर्कता हमारी साझा ज़िम्मेदारी” पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर प्रतियोगिता में विचार व्यक्त किए। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर अंचल कार्यालय तथा शाखाओं के बीच में क्रिकेट मैच का आयोजन भी किया गया।

अंचल कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा पैदल मार्च का भी आयोजन किया गया।

यूको बैंक के 84 गौरवशाली वर्ष

दिनांक 06 जनवरी, 2026 को अंचल की विभिन्न शाखाओं में हर्षोल्लास से कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर शाखाओं के ग्राहकों को आमंत्रित करके उनका सम्मान किया किया गया। बैंक से सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्यों को भी समारोह में सम्मिलित किया गया। इसमें हमारे ग्राहकों तथा स्टाफ सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। पर्यावरण के संवर्धन हेतु शाखाओं में वृक्षारोपण किया गया। मेरठ स्थित श्री सांई सेवा चैरीटेबल ट्रस्ट में सभी वृद्ध जनों को कंबल वितरित किए गए।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अंचल कार्यालय में एक गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस अवसर पर विभिन्न शाखाओं की महिला शाखा प्रमुखों की विशेष उपस्थिति रही । कार्यक्रम का उद्देश्य कार्यस्थल पर महिलाओं के योगदान का सम्मान करना तथा उनके पेयरी कृतज्ञता व्यक्त करना था ।

कार्यक्रम को संबोधित कराते हुए अंचल प्रमुख शी जावेद ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला । उन्होन्ने कहा कि महिलाओं की नेतृत्व क्षमता , समर्पण और कर्मनिष्ठा किसी भी संस्था की सफलता की आधारशिला है । उन्होंने बैंक की प्रगति में महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उल्लेखनीय योगदान की सराहना कराते हुए सभी को निरंतर उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रेरित किया ।

कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ तथा सभी उपस्थितजनों ने महिला शक्ति के प्रति सम्मान एवं सहयोग की भावना को और अधिक सुदृढ करने का संकल्प लिया ।

शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक

दिनांक 16 अक्तूबर, 2025 तथा 20.01.2026 को मेरठ में शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया | बैठक में श्री अंबिकानंद झा, महाप्रबंधक (कारोबार, विकास) दिल्ली ने सभी व्यावसायिक पैरामीटरों पर विस्तृत चर्चा करते हुए समीक्षा की | इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री जावेद ने शाखा प्रबंधकों को टीम के साथ मिलकर ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण तथा समयबद्ध कार्यप्रणाली पर फोकस करने को कहा | उन्होंने डिजिटल सेवाओं के अधिकतम उपयोग, शिकायतों के त्वरित निपटान तथा गुणवत्तापूर्ण ऋण वितरण को प्राथमिकता बनाने पर बल दिया |

एम.एस.एम.ई, कृषि एवं रिसोर्स कार्निवॉल

दिसंबर 2025 तथा मार्च, 2026 तिमाही में मेरठ अंचल द्वारा मेरठ, मुरादाबाद, अलीगढ़, बरेली, सहारनपुर तथा मथुरा जिलों में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों तथा कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ग्राहक संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उद्योगों एवं कृषि को बढ़ावा देने के लिए बैंक की विभिन्न योजनाओं के बारे में ग्राहकों को पावर प्वाइंट के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी गई।

इन संगोष्ठियों में प्रधान कार्यालय के फ्लेगशि प कारपोरेट क्रेडिट विभाग से पधारे महाप्रबंधक श्री सुजॉय द त्ता ने ग्राहकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दिया। अंचल प्रमुख श्री जावेद ने ग्राहकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा बैंक अपने सभी ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर ऋण स्वीकृति पत्रों का वितरण भी किया गया ।

मेरठ का शहीद स्मारक

(कवर पृष्ठ का संक्षिप्त विवरण)

मेरठ का शहीद स्मारक भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) की गौरवशाली स्मृतियों का प्रतीक है | 10 मई, 1857 की मेरठ की छवानी से अँग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह की शुरुआत हुई, जिसने पूरे देश में स्वतंत्रता आंदोलन की अलख जगाई | इसी ऐतिहासिक घटना और वीर क्रांतिकारियों के बलिदान को श्रद्धांजलि देने के लिए शहीद स्मारक का निर्माण किया गया |

स्मारक का प्रमुख आकर्षण लगभग 30 मीटर ऊंचा संगमरमर का शहीद स्तंभ है, जिसके शीर्ष पर अशोक स्तंभ का सिंह चिह्न स्थापित है | यह राष्ट्रीय गौरव, साहस और स्वतंत्रता का प्रतीक माना जाता है |

शहीद स्मारक परिसर में स्थित राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय में 1857 की क्रांति से संबंधित अनेक दुर्लभ चित्र , दस्तावेज़ , शस्त्रों की प्रतिकृतियां , डाक टिकट , सिक्के तथा अन्य ऐतिहासिक सामग्री प्रदर्शित की गई है | यह संग्रहालय नई पीढ़ी को स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास और क्रांतिकारियों के त्याग से परिचित कराता है |

आज शहीद स्मारक मेरठ की ऐतिहासिक पहचान के साथ-साथ देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना का प्रेरणास्रोत है |

मैं आज सफल हूँ क्योंकि मेरा एक ऐसा मित्र था जिसने मुझ पर विश्वास किया, और मैं उसका विश्वास तोड़ने का साहस नहीं कर सका। - अब्राहम लिंकन

प्रतिभा रतन
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय मेरठ

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम: खरगांव का चौक
लेखिका: आशा पाण्डेय
विधा: उपन्यास

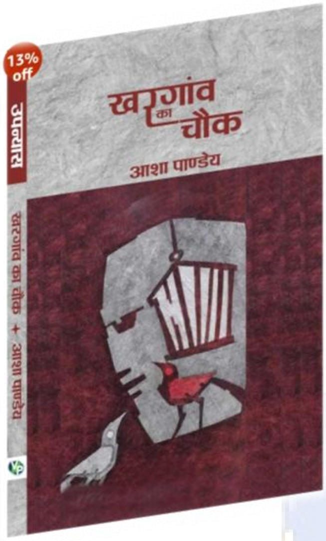

खरगांव का चौक समकालीन हिंदी साहित्य का एक प्रभावशाली उपन्यास है,जिसमें भारतीय ग्रामीण जीवन,सामाजिक परिवर्तन,मानवीय संबंधों और बदलते समय के प्रभाव को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया गया है। लेखिका आशा पाण्डेय ने गाँव के एक साधारण से चौक को कथा का केंद्र बनाकर उसके माध्यम से पूरे समाज की बदलती मानसिकता,संघर्षों और जीवन-मूल्यों को प्रस्तुत किया है।

उपन्यास का कथानक अत्यंत रोचक और यथार्थपरक है। इसमें गाँव के लोगों के सुख-दुख, पारिवारिक रिश्ते, सामाजिक असमानता, परंपरा और आधुनिकता के बीच का द्वंद्व तथा मानवीय संवेदनाओं का सुंदर चित्रण मिलता है। लेखिका ने पात्रों का चरित्र-चित्रण इतना जीवंत किया है कि पाठक स्वयं को उनके जीवन का हिस्सा महसूस करने लगता है। प्रत्येक पात्र अपने स्वभाव और परिस्थितियों के अनुरूप विकसित होता है, जिससे कथा स्वाभाविक और विश्वसनीय बन जाती है।

इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सहज,सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा है। कहीं भी अनावश्यक अलंकरण नहीं है, बल्कि बोलचाल की भाषा और स्थानीय परिवेश का सुंदर समावेश इसे और अधिक प्रभावशाली बनाता है। संवाद स्वाभाविक हैं तथा कथा को गति प्रदान करते हैं। लेखिका ने सामाजिक समस्याओं पर केवल प्रश्न ही नहीं उठाए, बल्कि मानवीय मूल्यों,पारस्परिक सहयोग और सकारात्मक सोच का संदेश भी दिया है।

खरगांव का चौक केवल एक गाँव की कहानी नहीं है,बल्कि भारतीय समाज के बदलते स्वरूप का सजीव दस्तावेज़ है। यह उपन्यास पाठकों को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है और यह संदेश देता है कि समाज का वास्तविक विकास तभी संभव है जब मानवीय संवेदनाएँ,आपसी विश्वास और सामाजिक समरसता बनी रहे।

निष्कर्षतः खरगांव का चौक एक पठनीय, विचारोत्तेजक और संवेदनशील उपन्यास है। सामाजिक सरोकारों,ग्रामीण परिवेश और मानवीय मूल्यों में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी और प्रेरणादायक सिद्ध होती है। यह उपन्यास पढ़ने के बाद पाठक के मन पर गहरी छाप छोड़ता है और लंबे समय तक सोचने के लिए विवश करता है।

महादेवी वर्मा – हिंदी साहित्य की आधुनिक मीरा

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की प्रमुख कवयित्री, लेखिका, शिक्षाविद् और समाजसेविका थीं। उन्हें हिंदी साहित्य में 'आधुनिक मीरा' तथा छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माना जाता है। उनकी रचनाओं में करुणा, संवेदना, प्रकृति-प्रेम, आध्यात्मिक चेतना और नारी-जीवन की पीड़ा का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। उन्होंने हिंदी साहित्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं और भारतीय संस्कृति तथा मानवीय मूल्यों को अपनी लेखनी के माध्यम से समृद्ध किया।

जन्म और प्रारंभिक जीवन

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को उत्तर प्रदेश के फ़र्रुख़ाबाद में हुआ। उनके पिता गोविंद प्रसाद वर्मा एक विद्वान एवं प्रगतिशील विचारों वाले शिक्षक थे, जबकि उनकी माता हेमरानी देवी धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। माता से उन्हें साहित्य, संगीत और अध्यात्म के संस्कार मिले। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में हुई तथा आगे की शिक्षा क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज, प्रयागराज में हुई। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में स्नातकोत्तर (एम.ए.) की उपाधि प्राप्त की।

व्यक्तिगत जीवन

उनका विवाह बाल्यावस्था में ही डॉ. स्वरूप नारायण वर्मा से हुआ, किंतु उन्होंने स्वतंत्र जीवन का मार्ग चुना और अपना अधिकांश समय शिक्षा, साहित्य तथा समाज-सेवा को समर्पित किया। वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या तथा बाद में कुलाधिपति रहीं। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्थान के लिए उल्लेखनीय कार्य किए।

साहित्य तथा प्रमुख रचनाएं

महादेवी वर्मा का साहित्य अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी है। उनकी प्रमुख काव्य-कृतियों में 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा' और 'यामा' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। 'यामा' को उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति माना जाता है, जिसके लिए उन्हें भारतीय साहित्य का सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। गद्य साहित्य में 'श्रृंखला की कड़ियाँ', 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी' और 'मेरा परिवार' अत्यंत लोकप्रिय हैं। उनके संस्मरण और रेखाचित्र मानवीय संवेदना तथा पशु-पक्षियों के प्रति करुणा के अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

सम्मान और योगदान

महादेवी वर्मा को साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान के लिए अनेक सम्मान प्राप्त हुए। उन्हें पद्म भूषण, ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा पद्म विभूषण (मरणोपरांत) सहित अनेक राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किए गए। वे हिंदी साहित्य सम्मेलन और विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं से भी सम्मानित हुईं।

निधन

महादेवी वर्मा का निधन 11 सितंबर 1987 को प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) में हुआ। यद्यपि वे आज हमारे बीच नहीं हैं, फिर भी उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को संवेदनशीलता, करुणा, मानवता और जीवन-मूल्यों की प्रेरणा देती हैं।

महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व साहित्य, शिक्षा और समाज-सेवा का अद्भुत संगम था।

उन्होंने अपनी लेखनी से न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि नारी चेतना, मानवीय संवेदनाओं और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को भी सशक्त अभिव्यक्ति दी। हिंदी साहित्य के इतिहास में उनका नाम सदैव अत्यंत सम्मान और आदर के साथ लिया जाएगा।

दीप्ता पोरस
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय मेरठ

कविता

बेशक देर से आ जाना

वो जो कुछ रेत मेरे दरवाज़े पर चमक रही है,
ये वो है जो कभी स्कूल से आती है,
कभी बगल के पार्क से आती है,
सांझ की यह रेत मेरे पल-पल को महका जाती है !

जाने कब यह नन्हे पैर बड़े हो जाएंगे,
इन गंदे जूतों को, इस रेते को – मेरे दरवाज़े तरस जाएंगे
जैसे मैं देर से आती हूँ, तुम भी देर से आ जाना.....
पर मैं पल-पल राह निहारूंगी......... बस इतना तुम्हें बताना था – बेशक देर से आ जाना !

एनपीएस वात्सल्य

योजना	पीएफआरडीए द्वारा विनियमित और प्रशासित एक बचत-सह-पेंशन योजना
पात्रता	सभी अवयस्क नागरिक (18 वर्ष तक की आयु)
संचालन	➢ नाबालिग के नाम पर खाता खोला जाएगा और अभिभावक द्वारा संचालित किया जाएगा ➢ नाबालिग एकमात्र लाभार्थी होगा
खाता कहाँ खोलें	➢ एनपीएस वात्सल्य खाता पॉइंट्स ऑफ प्रेजेंस (पीओपी) के माध्यम से खोला जा सकता है, जिसमें प्रमुख बैंक, इंडिया पोस्ट, पेंशन फंड शामिल हैं। ➢ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (ई-एनपीएस)
अपेक्षित प्रलेख	➢ अभिभावक का केवाईसी पहचान और पते के प्रमाण प्रस्तुत करके किया जाएगा (आधार, ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट, वॉटर आईडी कार्ड, नरेगा जॉब कार्ड, राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर) ➢ नाबालिग की जन्मतिथि का प्रमाण (जन्म प्रमाण पत्र, स्कूल छोड़ने का प्रमाण पत्र, मैट्रिकुलेशन प्रमाण पत्र, पैन, पासपोर्ट)
अंशदान	न्यूनतम 250 रुपये प्रति वर्ष और अधिकतम कोई सीमा नहीं
पेंशन निधि चयन	अभिभावक पीएफआरडीए के साथ पंजीकृत किसी भी पेंशन फंड का चयन कर सकते हैं।
निवेश विकल्प	1. डिफॉल्ट विकल्प : मोडरेट लाइफ साइकिल फंड-एलसी-50 (50% इक्विटी) 2. स्वत: विकल्प : अभिभावक लाइफ साइकिल फंड-एग्रेसिव- एलसी-75 (75% इक्विटी), मोडरेट एलसी-50 (50% इक्विटी) या कंजर्वेटिव-एलसी-25 (25% इक्विटी) का चयन कर सकते हैं। 3. सक्रिय विकल्प : अभिभावक इक्विटी (75% तह), कॉर्पोरेट ऋण (100% तक), सरकारी प्रतिभूतियों (100% तक) और वैकल्पिक परिसंपत्ति (5% तक) में निधियों के आबंटन का सक्रिय रूप से निर्णय लेते हैं।

निकासी, निकास और मृत्यु	➢ 3 साल की लॉक-इन अवधि के बाद शिक्षा, निर्दिष्ट बीमारी और विकलांगता के लिए अंशदान के 25% तक की निकासी की अनुमति है। अधिकतम तीन बार।
	➢ 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर, एनपीएस तैयार-1 (सभी नागरिक) में निर्बाध स्थानांतरण
	➢ 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर निकास की अनुमति है
	    ✚ 2.5 लाख रुपये से अधिक का कोष : 80% कोष वार्षिकी की खरीद के लिए उपयोग किया जाता है और 20% एकमुश्त निकाला जा सकता है।
	    ✚ 2.5 लाख रुपये से कम या बराबर का कोष एकमुश्त निकाला जा सकता है।
	मृत्यु पर पूरा कोष अभिभावक को लौटा दिया जाएगा।

हर चीज का हल होता है, आज नहीं तो कल होता है

जिंदगी है, तो संघर्ष भी है; तनाव है, काम का दबाव है; खुशियाँ हैं, तो डर और अनिश्चितताएँ भी हैं। किंतु सबसे सुकून देने वाली बात यह है कि इनमें से कोई भी अवस्था स्थायी नहीं होती। समय रूपी नदी निरंतर प्रवाहित रहती है और उसके साथ जीवन की हर परिस्थिति भी बहती चली जाती है। चाहे वह अपार खुशी का क्षण हो या गहरे दुःख का दौर, समय के अविरल प्रवाह में सब धीरे-धीरे विलीन हो जाता है।

जीवन की यात्रा में अनेक बार ऐसा लगता है मानो हम सुख-दुःख, तनाव, चिंता, भय, हताशा, निराशा, असफलता और रोगों के मकड़जाल में उलझ गए हों। उस समय समस्याएँ इतनी बड़ी प्रतीत होती हैं कि उनका कोई अंत दिखाई नहीं देता। किंतु यदि हम धैर्य बनाए रखें और समय पर विश्वास करें, तो वही कठिन दौर एक दिन पीछे छूट जाता है। परिवर्तन ही प्रकृति का शाश्वत नियम है; इसलिए न सुख सदैव रहता है और न ही दुःख। यही विश्वास हमें हर परिस्थिति में आगे बढ़ने की शक्ति देता है।

हम अक्सर तत्कालिक परिस्थितियों के इतने वशीभूत हो जाते हैं कि दूर-दूर तक आशा की एक क्षीण-सी किरण भी दिखाई नहीं देती। जो समस्या दूर से चींटी के समान छोटी लगती थी, वह हमारे निकट आते-आते मानो हाथी का विशाल रूप धारण कर लेती है। उसकी भयावहता से घबराकर हम परिस्थितियों के आगे स्वयं को समर्पित कर देते हैं और उन्हें अपने मन-मस्तिष्क पर पूरी तरह हावी होने देते हैं। परिणामस्वरूप वे परिस्थितियाँ हमारे पूरे अस्तित्व को झकझोर देती हैं और हमें हताशा, निराशा, भय तथा असहायता के भँवर में धकेल देती हैं। उस समय जीवन का एक-एक क्षण पहाड़-सा भारी प्रतीत होने लगता है।

दुर्भाग्य से हममें से अधिकांश लोग इसी मोड़ पर हार मान बैठते हैं। जब आशा की कोई किरण दिखाई नहीं देती, तब वे परिस्थितियों के सामने हथियार डाल देते हैं। किंतु सत्य यह है कि कठिन समय से बाहर निकलने का मार्ग रुक जाने में नहीं, बल्कि आगे बढ़ते रहने में है। यदि कोई व्यक्ति किसी अनजान और निर्जन रेगिस्तान में भटक जाए, तो उसके बचने की सबसे बड़ी संभावना निरंतर चलते रहने में है। उसी प्रकार यदि कोई नदी के बीच पहुँचकर हाथ-पाँव चलाना छोड़ दे, तो उसका डूबना निश्चित है। जीवन भी ठीक ऐसा ही है। सबसे घने अँधेरे में भी साहस, धैर्य और आत्मविश्वास का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

जीवन में ऐसे क्षण अवश्य आते हैं, जब लगता है कि अब सब कुछ समाप्त हो चुका है और आगे कोई राह शेष नहीं है। किंतु यही वह समय होता है, जब स्वयं पर विश्वास बनाए रखना सबसे अधिक आवश्यक होता है। दृढ़ता के साथ डटे रहिए, क्योंकि हर समस्या का समाधान होता है। यदि आज नहीं, तो कल अवश्य होता है। समय बदलता है, परिस्थितियाँ बदलती हैं और अंततः वही व्यक्ति विजयी होता है, जो कठिनाइयों के सामने झुकने के बजाय उनका सामना करने का साहस रखता है।

व्यवसाय मार्च, 2026
शीर्ष शाखाएं

कुल व्यवसाय

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	0192	मेरठ मुख्य	30625
2	0261	सिंभावली	22769
3	0949	मथुरा	20441
4	0627	सि.ला. बरेली	20012
5	0812	मेरठ कॉलेज	17361

चालू जमा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1876	एसएमआईसी अलीगढ़	3498
2	0949	मथुरा	1553
3	2460	गोवर्धन	1059
4	0204	मुरादाबाद मुख्य	1056
5	0812	मेरठ कॉलेज	996

बचत जमा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1949	नगर निगम	9090
2	0315	शिकारपुर	7204
3	1876	एसएमआईसी अलीगढ़	6043
4	0261	सिंभावली	5745
5	0766	धौंरा	5485

कासा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1949	नगर निगम	9809
2	1876	एसएमआईसी अलीगढ़	9574
3	0315	शिकारपुर	7489
4	0261	सिंभावली	6408
5	0766	धौंरा	5613

सावधि जमा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1754	सि.ला. मुरादाबाद	8368
2	0627	सि.ला. बरेली	7811
3	0192	मेरठ मुख्य	6526
4	0812	मेरठ कॉलेज	6272
5	0228	नैनीताल रोड बरेली	5771

कुल अग्रिम

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	0192	मेरठ मुख्य	19519
2	0261	सिंभावली	14643
3	2544	शास्त्रीनगर	11137
4	0949	मथुरा	10931
5	0812	मेरठ कॉलेज	9555

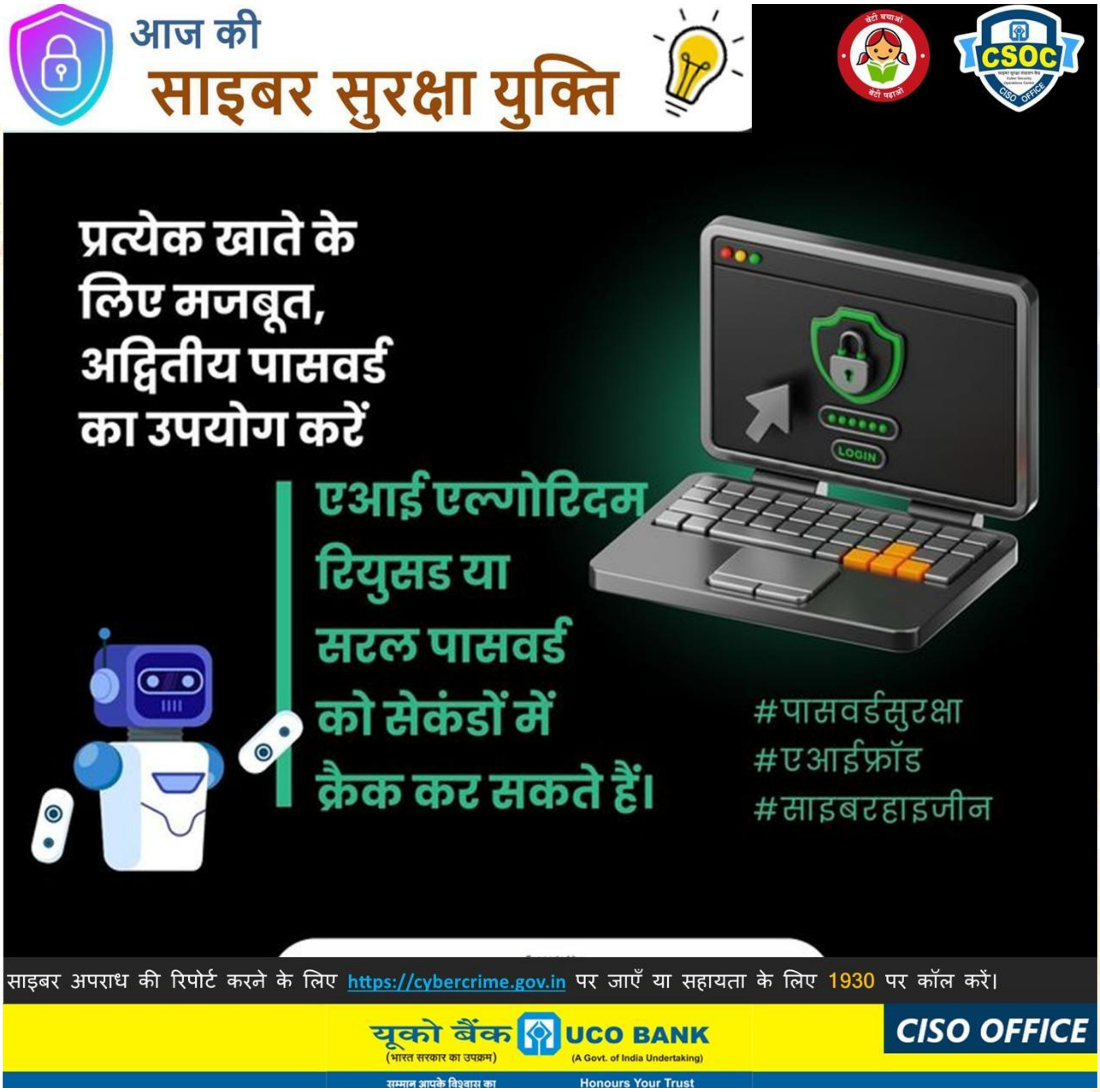

आज की
साइबर सुरक्षा युक्ति
CSOC
प्रत्येक खाते के लिए मजबूत, अद्वितीय पासवर्ड का उपयोग करें
LOGIN
एआई एल्गोरिदम रियुसड या सरल पासवर्ड को सेकंडों में क्रैक कर सकते हैं।
#पासवर्डसुरक्षा
#एआईफ्रॉड
#साइबरहाइजीन
साइबर अपराध की रिपोर्ट करने के लिए https://cybercrime.gov.in पर जाएँ या सहायता के लिए 1930 पर कॉल करें।
यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust
CISO OFFICE